

प

देवनागरी वर्णमाला में पवर्ग का पहला वर्ण है; ओष्ठ्य-स्पर्श-अघोष अल्प-प्राण व्यंजन। संगीत शास्त्र में पंचम स्वर का लघु रूप।

पंक पुं. (तत्.) 1. कीच, कीचड़, दलदल, मिट्टी मिला गंदा पानी, कर्दम 2. लेप, पोतने योग्य गीला पदार्थ जैसे- 'चंदन' 3. कलुषित या दूषित करने वाली कोई वस्तु: जैसे- 'पाप-पंक', पंक-ग्रह

पंकज पुं. (तत्.) 1. पंक (कीचड़) में पैदा होने वाला पौधा 2. कमल

पंकज-नाभ पुं. जिनकी नाभि से कमल निकलता या निकला है, विष्णु।

पंकज-योनि पुं. (तत्.) 'पंकज जात', -ब्रह्मा।

पंक-जात पुं. (तत्.) मगर, मगरमच्छ, कमल।

पंकजासन पुं. (तत्.) पंकज (कमल) जिनका आसन है, -'ब्रह्मा'।

पंकजिनी स्त्री. (तत्.) कमलिनी, कमलों से युक्त जलाशय।

पंकण पुं. (तत्.) वह स्थान जहाँ चांडाल रहते हैं, चांडाल की झोंपड़ी या निवास-स्थान।

पंक-पिच्छल वि. (तत्.) कीचड़ के कारण जिसमें फिसलन हो गई हो।

पंक-प्रभा पुं. (तत्.) एक नरक जहाँ कीचड़ ही कीचड़ है, एक नगर का नाम।

पंकरुह पुं. (तत्.) (पंक) कीचड़ में उगने वाला, कमल 2. सारस।

पंकवासी पुं. (तत्.) 1. पंक (कीचड़) में रहने वाला 2. केकड़ा 3. कर्कट।

पंक-शूरण पुं. (तत्.) कमल की जड़।

पंकार पुं. (तत्.) गड़ढों के कीचड़ में स्वतः उत्पन्न होने वाला कुरुरमुत्ते की जाति का एक पौधा 2.

सिंघाड़ा 3. सेवार 4. सेतु, बाँध 5. सीढ़ी, सोपान 6. जल कुब्जक।

पंकिल वि. (तत्.) 1. कीचयुक्त, कीचड़ मिला या कीचड़ वाला 2. गंदा 3. मैला 4. पुं बड़ी नाव-बजरा (पटी हुई वृहत नाव)।

पंकिलता स्त्री. (तत्.) 1. पंकिल या कीचड़ युक्त होने की अवस्था, स्थिति या भाव 2. मैल, गंदगी 3. कलुष, कालिमा।

पंकेरुह पुं. (तत्.) दे. पंकरुह।

पंकेशय वि. (तत्.) पंक या कीचड़ में निवास करने वाला, पंकशायी।

पंकेशया स्त्री. (तत्.) 'जोंक'।

पंकचर पुं. (अं.) रबर की ट्यूब, बाल, ब्लैडर आदि में किसी नुकीली वस्तु के चुभने से होने वाला छेद।

पंक्ति स्त्री. (तत्.) 1. ऐसा समूह जिसमें बहुत सी वस्तुएँ या व्यक्ति एक विधि में क्रम से स्थित हों; पेड़ों की पंक्ति, छात्रों की पंक्ति या कतार आदि 2. एक वर्णिक छंद 3. बिरादरी या समाज में एक साथ बैठकर भोजन करने वालों का समूह; पंगत 4. ब्राह्मणों का वर्ग 5. चालीस अक्षरों का एक वैदिक छंद 6. सीधी खिंची हुई रेखा, लकीर 7. प्राचीन भारत में दस-दस सैनिकों का एक समूह।

पंक्तिका स्त्री. (तत्.) पंक्ति, लाइन, कतार।

पंक्तिकृत वि. (तत्.) श्रेणीबद्ध।

पंक्तिच्युत वि. (तत्.) किसी दोष, कलंक या अपराध के कारण जाति, बिरादरी या समूह से बाहर निकाला गया, बिरादरी या जाति बहिष्कृत, जिसे बिरादरी के लोग अपने साथ भोजन न कराएँ।

पंक्तिपावन पुं. (तत्.) 1. ऐसा ब्राह्मण जो विद्या, तप, तथा जानादि से विशिष्ट हो और जिसके श्राद्ध आदि में आगमन से अन्य आमंत्रित ब्राह्मणों की पंक्ति भी पवित्र हो जाए।

पंक्तिबद्ध वि. (तत्.) पंक्ति में बद्ध या लगा हुआ।